



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
<i>The Times of India</i>	27-11-24	05	01

THE TIMES OF INDIA

Agri review meet held at HAU

Hisar: A two-day annual review meeting on the topic, "Importance of nematodes in agriculture", was inaugurated at Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University on Tuesday. University vice-chancellor Prof B R Kamboj was the chief guest while Indian Council of Agricultural Research additional director general Dr Poonam Jasrotia was the guest of honour. Kamboj said that due to lack of information, farmers have been planting diseased plants from nurseries in their fields, due to which they have to suffer financial loss.



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दीनक मसक	27-11-24	4	1-4

एचएयू में 'कृषि में सूत्रकृमियों का महत्व' विषय पर दो दिवसीय वार्षिक समीक्षा बैठक का शुभारंभ सूत्रकृमि की जानकारी से ही इसके नुकसान से फसल को बचाया जा सकता है : प्रो. काम्बोज

भास्करन्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना- 'कृषि में सूत्रकृमियों का महत्व विषय पर दो दिवसीय वार्षिक समीक्षा बैठक का शुभारंभ किया गया। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में आयोजित इस बैठक में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज मुख्य अतिथि जबकि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अतिरिक्त महानिदेशक डॉ. पूनम जसरोटिया विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित रहें। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि संरक्षित कृषि प्रणाली, अमरूद व नींबू के बागों, सब्जी की फसलों, चावल-गेहू व अन्य फसलों में भी जड़-गांठ सूत्रकृमि की समस्या बढ़ती जा रही है। किसान जानकारी के अभाव में नर्सरी से रोगग्रस्त पौधों को अपने खेत या बाग में लगा देते हैं, जिससे बाद में उन्हें आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। बागवानी फसलों को लगाने से पहले किसान को अपने खेत की मिट्टी जांच अवश्य करवानी चाहिए ताकि समय रहते बीमारी का पता लगाया जा सके। उन्होंने बताया कि सूत्रकृमि की जानकारी से ही इसके नुकसान से फसल को बचाया जा सकता है।



हकृवि में कृषि में सूत्रकृमियों का महत्व विषय पर आयोजित समीक्षा बैठक में पुस्तिका का विमोचन करते मुख्यातिथि एवं अन्य अधिकारी।

देशभर के 24 केंद्रों के वैज्ञानिक ले रहे भाग

विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने सभी का स्वागत किया जबकि सूत्रकृमि विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। मंच का संचालन डॉ. चेन्ना भट्ट ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सूत्रकृमि विभाग के अधिकारीगण सहित देश के 24 केंद्रों से आए वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों ने भाग लिया।

खेतों की नियमित निगरानी की जा रही

हरियाणा की कृषि उत्पादकता पर इन सूत्रकृमि के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए प्रतिरोधी फसल किस्मों, फसल चक्र और प्रभावी जैव कीटनाशकों के उपयोग के बारे में किसानों को जागरूक किया जा रहा है। विभाग के अनुसंधान कार्य के आधार पर चावल, गेहू, पॉलीहाउस टमाटर, खीरा और शिमला मिर्च), मशरूम, फल फसलों, सब्जियों आदि में पादप परजीवी निमेटोड के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियां विकसित की गई हैं। निमेटोड समस्या के निदान के लिए सर्वेक्षण और मिट्टी के नमूने के माध्यम से खेतों की नियमित निगरानी की जा रही है।

प्राकृतिक खेती और सब्जियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम बारे बताया

विशिष्ट अतिथि डॉ. पूनम जसरोटिया ने नैनो टेक्नोलॉजी, आरएनएआई से सूत्रकृमि प्रबंधन तथा लाभदायक सूत्रकृमियों से कीड़ों की रोकथाम के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि इस समीक्षा बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधिकारियों और विशेषज्ञों की मौजूदगी में प्रयोगात्मक नतीजों और महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्रस्तुत किया जाएगा। प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर डॉ. गौतम चावला ने कृषि में सूत्रकृमियों द्वारा नई उभरती समस्याओं, उनके प्रबंधन तथा किसानों द्वारा सूत्रकृमियों के सफल प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने गत वर्ष के दौरान किए गए कार्यों एवं उपलब्धियों के बारे में विस्तृत रिपोर्ट भी प्रस्तुत की। उन्होंने प्राकृतिक खेती, विभिन्न फसलों, दालों, सब्जियों एवं किसानों को विभिन्न प्रकार की जानकारी देने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में भी बताया।

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समय उजाला	27-11-24	4	1-5

ग्रीन और पॉली हाउस में खेती करने के लिए जमीन की जांच कराना जरूरी : डॉ. गौतम

एचएयू में 'कृषि में सूत्रकृमियों का महत्व', विषय पर दो दिवसीय वार्षिक समीक्षा बैठक का शुभारंभ

- नीमाटोड्स रोकने के लिए पूरे भारत में 24 सेंटर हैं
- सूत्रकृमि के बारे में वैज्ञानिकों ने बैठक में दी जानकारी

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। आईसीएआर के प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर डॉ. गौतम चावला ने कहा कि कृषि में सूत्रकृमि की अपेक्षा बहुत कम गति से पहुंचते हैं। नर्सरी या पानी के बहाव के जरिए सूत्रकृमि का फैलाव अधिक होता है। यह बहुत छोटे होते हैं। पहले पैच में इसका असर दिखाई देता है। बाद में यह पूरे खेत में फैल जाते हैं।



डॉ. गौतम चावला।

छोटे पौधे में बीमारी के प्रभाव अधिक होता है। अगर नर्सरी में ही पौधे में सूत्रकृमि होंगे तो वह व्यापक नुकसान होगा। अब सरकार ने फैसला लिया है कि ग्रीन-पॉली हाउस में खेती करने के लिए वहां की जमीन की जांच जरूरी है। नर्सरी के सर्टिफिकेट के लिए भी जांच जरूरी कर दी गई है।

डॉ. चावला ने कृषि में सूत्रकृमियों द्वारा नई उभरती समस्याओं, उनके प्रबंधन तथा किसानों द्वारा सूत्रकृमियों के सफल प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने गत वर्ष के दौरान किए गए कार्यों एवं उपलब्धियों के बारे में विस्तृत रिपोर्ट भी प्रस्तुत की। उन्होंने प्राकृतिक खेती, विभिन्न फसलों, दालों, सब्जियों एवं किसानों को विभिन्न प्रकार की जानकारी देने के लिए



एचएयू में मंच पर उपस्थित मुख्यातिथि एवं अन्य अधिकारी।

संवाद

प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में भी बताया। मंच का संचालन डॉ. चेन्ना भट्ट ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सूत्रकृमि विभाग के अधिकारीगण सहित देश के 24 केंद्रों से आए वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों ने भाग लिया।

कृषि में दो तरह के सूत्रकृमि होते हैं। एक वो जो हमारी फसलों को फायदा पहुंचाते हैं और दूसरे फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं। ये बहुत छोटे होते हैं और जिनका साइज लगभग एक एमएम का होता है। सूत्रकृमि की जितनी मात्रा जमीन में ज्यादा होगी उतना ही पौधों को नुकसान ज्यादा होगा। इसमें कई तरह लक्षण पौधों में नजर आने लगते हैं, जिनमें पौधे मुरझाने लगते हैं, उनमें पानी की कमी दिखने लग जाती है। उनके पत्ते छोटे नजर आते हैं पत्तियां पीली पड़ने लगती हैं। ऐसे में पौधे

कमजोर हो जाते हैं। ज्यादातर सूत्रकृमि जड़ों से भोजन लेते हैं और जड़ों को नुकसान होने से दूसरे बैक्टिरिया पौधों पर हमला कर देते हैं जिससे पौधे खराब होने लगते हैं।

जड़ गांठ सूत्रकृमि : जड़ों में गांठें बनाते हैं। इनको पहचानना ज्यादा आसान है किसी पौधे की जड़ में गांठें बनी हुई हैं तो उसमें जड़ गांठ सूत्रकृमि होता है। बहुत सारे फलों के पौधों और चावल की किस्मों में ये नुकसान पहुंचाते हैं। अमरूद में ज्यादा ये बीमारी देखने को मिलती है।

डॉ. गौतम चावला ने बताया कि नीमाटोड्स रोकने के लिए पूरे भारत में 24 सेंटर हैं जिसमें 21 साइंस कोऑर्डिनेट सेंटर और 30 के करीब वैज्ञानिक इसको रोकने के लिए काम कर रहे हैं। इसके लिए टीम देश के अलग-अलग स्थानों पर उपचार के

लिए शोध किया जा रहा है। जिस जगह के शोध का परिणाम अच्छा मिलता है उसे वहां की यूनिवर्सिटी के अधीन में शोध कार्य करवाए जाते हैं। इसमें ज्यादातर बायो एजेंट पर काम करते हैं। हमारे पास पहले निमेटिसाइड थी कार्बोप्युरो जो बहुत प्रयोग में लाई जाती थी। इसको सरकार बैन कर रही है। निमेटिसाइड न होने से बायो एजेंट को किस तरीके से किस फसल पर और कब-कब इस्तेमाल करें। इसके लिए बहुत सारे बायो एजेंट डेवलप किए हैं और जो अच्छे होते हैं उन्हें किसानों तक भेजा जाता है। बायोफ्लोपीएफटू बायोएजेंट का कार्बिनेशन है जो बहुत अच्छा है। ऐसे ही और भी मिश्रण हैं जिसका प्रयोग करके सूत्रकृमि को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है और किसान फसल का अच्छा उत्पादन ले सकते हैं। ट्राइकोडर्मा,

बेसिलेस सबटिलिस और तमिलनाडू के कृषि विश्वविद्यालय और आईएचआर द्वारा बनाए बायो एजेंट हैं जो फसलों, मिट्टी और बीजों को फंगस से बचाव करते हैं। ये फंगस नाशक हैं इन सभी बायोएजेंट को खाद के साथ मिलाकर फसलों में प्रयोग करने से इनमें होने वाले रोगों पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

विश्विष्ट अतिथि डॉ. पूनम जसरोटिया ने नैनो टेक्नोलॉजी, आरएनएआई से सूत्रकृमि प्रबंधन तथा लाभदायक सूत्रकृमियों से कीड़ों की रोकथाम के महत्व पर प्रकाश डाला। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस्के पाहुजा ने सभी का स्वागत किया जबकि सूत्रकृमि विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

जानकारी से ही फसल को बचाया जा सकता है

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना- 'कृषि में सूत्रकृमियों का महत्व', विषय पर दो दिवसीय वार्षिक समीक्षा बैठक में बतौर मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि सूत्रकृमि की जानकारी से ही इसके नुकसान से फसल को बचाया जा सकता है। हरियाणा की कृषि उत्पादकता पर इन सूत्रकृमि के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए प्रतिरोधी फसल किस्मों, फसल चक्र और प्रभावी जैव कीटनाशकों के उपयोग के बारे में किसानों को जागरूक किया जा रहा है। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में आयोजित इस बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अतिरिक्त महानिदेशक डॉ. पूनम जसरोटिया विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित रहें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	27-11-24	4	1-4

सूत्रकृमियों से बचाया जा सकता है फसलों को : कुलपति

जागरण संग्रहदाता • हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना- 'कृषि में सूत्रकृमियों का महत्त्व', विषय पर दो दिवसीय वार्षिक समीक्षा बैठक का शुभारंभ हुआ। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में आयोजित बैठक में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज मुख्य अतिथि जबकि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अतिरिक्त महानिदेशक डा. पूनम जसरोटिया विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित रहें। इसमें देश के 24 केंद्रों से आए वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों ने भाग लिया।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि संरक्षित कृषि प्रणाली, अमरूद व नींबू के बागों, सब्जी की फसलों, चावल-गोहूँ व अन्य फसलों में भी जड़-गांठ सूत्रकृमि की समस्या बढ़ती जा रही है। किसान जानकारी

● कृषि में सूत्रकृमियों का महत्त्व विषय पर हुई वार्षिक समीक्षा बैठक

● देश के 24 केंद्रों से आए वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों ने लिया भाग



एचएयू में कृषि में सूत्रकृमियों का महत्त्व विषय पर वार्षिक समीक्षा बैठक में पुस्तिका का विमोचन करते मुख्यातिथि कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज एवं अन्य अधिकारी • पीआरओ

के अभाव में नर्सरी से रोगग्रस्त पौधों को अपने खेत या बाग में लगा देते हैं, जिससे बाद में उन्हें आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। उन्होंने कहा कि बागवानी फसलों को लगाने से पहले किसान को अपने खेत की मिट्टी जांच अवश्य करवानी चाहिए। उन्होंने बताया कि सूत्रकृमि की जानकारी से ही इसके नुकसान से फसल को

बचाया जा सकता है।

हरियाणा की कृषि उत्पादकता पर इन सूत्रकृमि के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए प्रतिरोधी फसल किस्मों, फसल चक्र और प्रभावी जैव कीटनाशकों के उपयोग के बारे में किसानों को जागरूक किया जा रहा है। विभाग के अनुसंधान कार्य के आधार पर चावल, गोहूँ, पालीहाउस

(टमाटर, खीरा और शिमला मिर्च), मशरूम, फल फसलों, सब्जियों आदि में पादप परजीवी निमेटोड के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियां विकसित की गई हैं। कार्यक्रम में फसलों पर सूत्रकृमि प्रबंधन विषय पर पुस्तिका का विमोचन भी किया गया।

विशिष्ट अतिथि डा. पूनम जसरोटिया ने नैनो टेक्नोलॉजी, आरएनएआई से सूत्रकृमि प्रबंधन तथा लाभदायक सूत्रकृमियों से कीड़ों की रोकथाम के महत्त्व पर प्रकाश डाला। प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर डा. गौतम चावला ने कृषि में सूत्रकृमियों द्वारा नई उभरती समस्याओं, उनके प्रबंधन तथा किसानों द्वारा सूत्रकृमियों के सफल प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पाहुजा, सूत्रकृमि विभाग के विभागाध्यक्ष डा. अनिल कुमार, डा. चेत्रा भट्ट मौजूद थे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

पंजाब केसरी

27-11-24

4

5-8

'कृषि में सूत्रकृमियों का महत्व', विषय पर 2 दिवसीय वार्षिक समीक्षा बैठक का शुभारंभ

सूत्रकृमि की जानकारी से ही फसल को बचाया जा सकता है : प्रो. काम्बोज

हिसार, 26 नवम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना 'कृषि में सूत्रकृमियों का महत्व', विषय पर 2 दिवसीय वार्षिक समीक्षा बैठक का शुभारंभ हुआ। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में आयोजित इस बैठक में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्य अतिथि, जबकि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अतिरिक्त महानिदेशक डॉ. पूनम जसरोटिया विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित रही।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि नेमाटोलॉजी विभाग ने अपनी स्थापना के पश्चात नई ऊंचाइयों को छुआ है और शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। विभाग ने राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सूत्रकृमि प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर कृषि के क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ाने में अहम योगदान दिया है।

उन्होंने बताया कि संरक्षित कृषि प्रणाली, अमरूद व नींबू के बागों, सब्जी की फसलों, चावल-गेहूँ व अन्य फसलों में भी जड़-गांठ सूत्रकृमि



बैठक को संबोधित करते मुख्यातिथि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

की समस्या बढ़ती जा रही है। उन्होंने बताया कि किसान जानकारी के अभाव में नर्सरी से रोगग्रस्त पौधों को अपने खेत या बाग में लगा देते हैं, जिससे बाद में उन्हें आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। उन्होंने कहा कि बागवानी फसलों को लगाने से पहले किसान को अपने खेत की मिट्टी जांच अवश्य करवानी चाहिए, ताकि समय रहते बीमारी का पता लगाया जा सके।

उन्होंने बताया कि सूत्रकृमि की जानकारी से ही इसके नुकसान से फसल को बचाया जा सकता है। हरियाणा की कृषि उत्पादकता पर इन सूत्रकृमि के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए प्रतिरोधी फसल किस्मों, फसल चक्र और प्रभावी जैव कीटनाशकों के उपयोग

के बारे में किसानों को जागरूक किया जा रहा है। विभाग के अनुसंधान कार्य के आधार पर चावल, गेहूँ, पॉलीहाऊस (टमाटर, खीरा और शिमला मिर्च), मशरूम, फल फसलों, सब्जियों आदि में पादप परजीवी निमेटोड के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियां विकसित की गई हैं। निमेटोड समस्या के निदान के लिए सर्वेक्षण और मिट्टी के नमूने के माध्यम से खेतों की नियमित निगरानी की जा रही है। कार्यक्रम में फसलों पर सूत्रकृमि प्रबंधन विषय पर पुस्तिका का विमोचन भी किया गया।

विशिष्ट अतिथि डॉ. पूनम जसरोटिया ने नैनो टैक्नोलॉजी, आर.एन.ए.आई. से सूत्रकृमि प्रबंधन तथा लाभदायक सूत्रकृमियों से कीड़ों

की रोकथाम के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि इस समीक्षा बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधिकारियों और विशेषज्ञों की मौजूदगी में प्रयोगात्मक नतीजों और महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्रस्तुत किया जाएगा। इस बैठक में विभिन्न केंद्रों के सूत्रकृमि वैज्ञानिक पिछले साल के कार्यों के आधार पर अपने अनुभव साझा करेंगे साथ ही अगले वर्ष की कार्य योजनाओं का निर्धारण भी करेंगे।

प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर डॉ. गौतम चावलाने ने कृषि में सूत्रकृमियों द्वारा नई उभरती समस्याओं, उनके प्रबंधन तथा किसानों द्वारा सूत्रकृमियों के सफल प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने गत वर्ष के दौरान किए गए कार्यों एवं उपलब्धियों के बारे में विस्तृत रिपोर्ट भी प्रस्तुत की। उन्होंने प्राकृतिक खेती, विभिन्न फसलों, दालों, सब्जियों एवं किसानों को विभिन्न प्रकार की जानकारी देने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में भी बताया। मंच का संचालन डॉ. चेत्रा भट्ट ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सूत्रकृमि विभाग के अधिकारीगण सहित देश के 24 केंद्रों से आए वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों ने भाग लिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	27.11.24		

बैठक

एचएयू में 'कृषि में सूत्रकृमियों का महत्व', पर वार्षिक समीक्षा बैठक का शुभारंभ

सूत्रकृमि की जानकारी से ही इसके नुकसान से फसल को बचा संभव : प्रो. काम्बोज

हरिभूमि न्यूज ▶ हिंसार



हिसार। पुस्तिका का विमोचन करते मुख्यातिथि एवं अन्य अधिकारी।

फोटो: हरिभूमि

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना 'कृषि में सूत्रकृमियों का महत्व' पर दो दिवसीय वार्षिक समीक्षा बैठक का शुभारंभ हुआ। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में आयोजित इस बैठक में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्य अतिथि जबकि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अतिरिक्त महानिदेशक डॉ. पूनम जसरोटिया विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित रही।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि नेमाटोलॉजी विभाग ने अपनी स्थापना के पश्चात नई ऊंचाइयों को लुआ है और शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। विभाग ने राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सूत्रकृमि प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर कृषि के क्षेत्र में

उत्पादकता बढ़ाने में अहम योगदान दिया है। उन्होंने बताया कि संरक्षित कृषि प्रणाली, अमरूद व नींबू के बागों, सब्जी की फसलों, चावल-गेहूँ व अन्य फसलों में भी जड़-गाँठ सूत्रकृमि की समस्या बढ़ती जा रही है। उन्होंने बताया कि किसान जानकारी के अभाव में नर्सरी से रोगग्रस्त पौधों को अपने खेत या बाग में लगा देते हैं, जिससे बाद में उन्हें आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। उन्होंने कहा कि बागवानी फसलों को लगाने से पहले किसान को अपने खेत की मिट्टी जांच

अवश्य करवाना चाहिए ताकि समय रहते बीमारी का पता लगाया जा सके। उन्होंने बताया कि सूत्रकृमि की जानकारी से ही इसके नुकसान से फसल को बचाया जा सकता है। हरियाणा की कृषि उत्पादकता पर इन सूत्रकृमि के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए प्रतिरोधी फसल किस्मों, फसल चक्र और प्रभावी जैव कीटनाशकों के उपयोग के बारे में किसानों को जागरूक किया जा रहा है। विभाग के अनुसंधान कार्य के आधार पर चावल, गेहूँ, पॉलीहाउस (टमाटर, खीरा और

शिमला मिर्च), मशरूम, फल फसलों, सब्जियों आदि में पादप परजीवी निमेटोड के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियाँ विकसित की गई हैं। निमेटोड समस्या के निदान के लिए सर्वेक्षण और मिट्टी के नमूने के माध्यम से खेतों की नियमित निगरानी की जा रही है। कार्यक्रम में फसलों पर सूत्रकृमि प्रबंधन विषय पर पुस्तिका का विमोचन भी किया गया। विशिष्ट अतिथि डॉ. पूनम जसरोटिया ने नैनो टेक्नोलॉजी, आरएनएआई से सूत्रकृमि प्रबंधन तथा लाभदायक सूत्रकृमियों से

कीड़ों की रोकथाम के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि इस समीक्षा बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधिकारियों और विशेषज्ञों की मौजूदगी में प्रयोगात्मक नतीजों और महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्रस्तुत किया जाएगा। प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर डॉ. गौतम चावला ने कृषि में सूत्रकृमियों द्वारा नई उभरती समस्याओं, उनके प्रबंधन तथा किसानों द्वारा सूत्रकृमियों के सफल प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दी। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने सभी का स्वागत किया जबकि सूत्रकृमि विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। मंच का संचालन डॉ. चेतना भट्ट ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सूत्रकृमि विभाग के अधिकारीगण सहित देश के 24 केंद्रों से आए वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों ने भाग लिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उज्ज्वल समाचार	27.11.24	10	5-7

सूत्रकृमि की जानकारी से ही इसके नुकसान से फसल को बचाया जा सकता है : प्रो. बी.आर. काम्बोज

एचएयू में 'कृषि में सूत्रकृमियों का महत्व' विषय पर दो दिवसीय वार्षिक समीक्षा बैठक का शुभारंभ

हिसार, 26 नवम्बर (किरंद वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना 'कृषि में सूत्रकृमियों का महत्व', विषय पर दो दिवसीय वार्षिक समीक्षा बैठक का शुभारंभ हुआ। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में आयोजित बैठक में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि जबकि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अतिरिक्त महानिदेशक डॉ. पूनम जसरोटिया विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित रही। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि नेमाटोलॉजी विभाग ने अपनी स्थापना के पश्चात नई ऊंचाइयों को छुआ और शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। विभाग ने राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सूत्रकृमि प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर कृषि के क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ाने में अहम योगदान दिया है। उन्होंने बताया



बैठक को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

कि संरक्षित कृषि प्रणाली, अमरूद व नींबू के बागों, सब्जी की फसलों, चावल-गेहूँ व अन्य फसलों में भी जड़-गांठ सूत्रकृमि की समस्या बढ़ती जा रही है। उन्होंने बताया कि किसान जानकारी के अभाव में नर्सरी से अपने खेत या बाग में लगा देते हैं, जिससे बाद में उन्हें आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। उन्होंने कहा कि बागवानी फसलों को लगाने से पहले किसान को अपने खेत की मिट्टी जांच अवश्य करवानी चाहिए ताकि समय रहते बीमारी का पता लगाया जा सके। हरियाणा की कृषि उत्पादकता पर इन सूत्रकृमि के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए प्रतिरोधी फसल किस्मों, फसल चक्र और प्रभावी जैव कीटनाशकों के उपयोग के बारे में किसानों को

का विमोचन भी किया गया। विशिष्ट अतिथि डॉ. पूनम जसरोटिया ने नैनो टेक नोलॉजी, आरएनएआई से सूत्रकृमि प्रबंधन तथा लाभदायक सूत्रकृमियों से कीड़ों की रोकथाम का महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि इस समीक्षा बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधिकारियों और विशेषज्ञों की मौजूदगी में प्रयोगात्मक नतीजों और महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्रस्तुत किया जाएगा। बैठक में विभिन्न केन्द्रों के सूत्रकृमि वैज्ञानिक पिछले साल के कार्यों के आधार पर अपने अनुभव साझा करेंगे साथ ही अगले वर्ष की कार्य योजनाओं का निर्धारण भी करेंगे। प्रोजैक्ट कोऑर्डिनेटर डॉ. गौतम चावला ने कृषि में सूत्रकृमियों द्वारा नई उभरती समस्याओं, उनके प्रबंधन तथा किसानों द्वारा सूत्रकृमियों के सफल प्रबंधन के बारे में जानकारी दी। उन्होंने गत वर्ष के दौरान किए गए कार्यों एवं उपलब्धियों के बारे में विस्तृत रिपोर्ट भी प्रस्तुत की। उन्होंने प्राकृतिक खेती, विभिन्न फसलों, दालों, सब्जियों एवं किसानों को विभिन्न प्रकार की जानकारी देने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में भी बताया। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने सभी का स्वागत किया जबकि सूत्रकृमि विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। मंच का संचालन डॉ. चैत्रा भट्ट ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सूत्रकृमि विभाग के अधिकारीगण सहित देश के 24 केन्द्रों से आए वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों ने भाग लिया।

जागरूक किया जा रहा है। विभाग के अनुसंधान कार्य के आधार पर चावल, गेहूँ, पॉलीहाउस (टमाटर, खीरा और शिमला मिर्च), मशरूम, फल फसलों, सब्जियों आदि में पादप परजीवी निमेटोड के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियां विकसित की गई हैं। निमेटोड समस्या के निदान के लिए सर्वेक्षण और मिट्टी के नमूने के माध्यम से खेतों की नियमित निगरानी की जा रही है। कार्यक्रम में फसलों पर सूत्रकृमि प्रबंधन विषय पर पुस्तिका



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	26.11.2024	--	--

सूत्रकृमि की जानकारी से ही इसके नुकसान से फसल को बचाया जा सकता है : प्रो. काम्बोज

एचएयू में 'कृषि में सूत्रकृमियों का महत्त्व', विषय पर वार्षिक समीक्षा बैठक का शुभारंभ

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना- 'कृषि में सूत्रकृमियों का महत्त्व', विषय पर दो दिवसीय वार्षिक समीक्षा बैठक का शुभारंभ हुआ। इस बैठक में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्य अतिथि जबकि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अतिरिक्त महानिदेशक डॉ. पूनम जसरोटिया विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित रही।

कुलपति ने कहा कि नेमाटोलॉजी विभाग ने अपनी स्थापना के पश्चात नई ऊंचाइयों को छुआ है और शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। विभाग ने राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सूत्रकृमि प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर कृषि के क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ाने में



अहम योगदान दिया है। उन्होंने बताया कि संरक्षित कृषि प्रणाली, अमरूद व नींबू के बागों, सब्जी की फसलों, चावल-गेहूं व अन्य फसलों में भी जड़-गांठ सूत्रकृमि की समस्या बढ़ती जा रही है। उन्होंने बताया कि किसान जानकारी के अभाव में नसरी से रोगग्रस्त पौधों को अपने खेत या बाग में लगा देते हैं, जिससे बाद में उन्हें आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। उन्होंने कहा कि बागवानी फसलों को लगाने से पहले किसान को अपने खेत की मिट्टी जांच अवश्य करवानी चाहिए ताकि समय रहते

बीमारी का पता लगाया जा सके। उन्होंने बताया कि सूत्रकृमि की जानकारी से ही इसके नुकसान से फसल को बचाया जा सकता है। कार्यक्रम में फसलों पर सूत्रकृमि प्रबंधन विषय पर पुस्तिका का विमोचन भी किया गया।

डॉ. पूनम जसरोटिया ने नैनो टेक्नोलॉजी, आरएनएआई से सूत्रकृमि प्रबंधन तथा लाभदायक सूत्रकृमियों से कीड़ों की रोकथाम के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर डॉ. गौतम चावला ने कृषि में सूत्रकृमियों द्वारा

नई उभरती समस्याओं, उनके प्रबंधन तथा किसानों द्वारा सूत्रकृमियों के सफल प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने सभी का स्वागत किया जबकि सूत्रकृमि विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। मंच का संचालन डॉ. चेत्रा भट्ट ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सूत्रकृमि विभाग के अधिकारीगण सहित देश के 24 केंद्रों से आए वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों ने भाग लिया।



समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	26.11.2024	--	--

सूत्रकृमि की जानकारी से ही इसके नुकसान से फसल को बचाया जा सकता है : प्रो. बी. आर. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार, 26 नवंबर। (अभिनव शर्मा) चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना- 'कृषि में सूत्रकृमियों का महत्व', विषय पर दो दिवसीय वार्षिक समीक्षा बैठक का शुभारंभ हुआ। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में आयोजित इस बैठक में विश्व विद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्य अतिथि जबकि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अतिरिक्त महानिदेशक डॉ. पूनम जसरोटिया विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित रही। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि नेमाटोलॉजी विभाग ने अपनी स्थापना के पश्चात नई ऊंचाइयों को छुआ है और शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। विभाग ने राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सूत्रकृमि प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर कृषि के क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ाने में अहम योगदान दिया है। उन्होंने बताया कि संरक्षित कृषि प्रणाली, अमरूद व नींबू के बागों, सब्जी को फसलों, चावल-गेहू व अन्य फसलों में भी जड़-गांठ सूत्रकृमि की समस्या बढ़ती जा रही है। उन्होंने बताया कि किसान जानकारी के अभाव में नर्सरी से रोगग्रस्त पौधों को अपने खेत या बाग में लगा देते हैं, जिससे बाद में उन्हें आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। उन्होंने कहा कि बागवानी फसलों को लगाने से पहले



किसान को अपने खेत की मिट्टी जांच अवश्य करवानी चाहिए ताकि समय रहते बीमारी का पता लगाया जा सके। उन्होंने बताया कि सूत्रकृमि की जानकारी से ही इसके नुकसान से फसल को बचाया जा सकता है। हरियाणा की कृषि उत्पादकता पर इन सूत्रकृमि के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए प्रतिरोधी फसल किस्मों, फसल चक्र और प्रभावी जैव कीटनाशकों के उपयोग के बारे में किसानों को जागरूक किया जा रहा है। कार्यक्रम में फसलों पर सूत्रकृमि प्रबंधन विषय पर पुस्तिका का विमोचन भी किया गया। विशिष्ट अतिथि डॉ. पूनम जसरोटिया ने नैनो टेक्नोलॉजी, आर एन ए आई से सूत्रकृमि प्रबंधन तथा लाभदायक सूत्रकृमियों से कीड़ों की रोकथाम के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि इस समीक्षा बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधिकारियों और विशेषज्ञों की मौजूदगी में प्रयोगात्मक नतीजों और महत्वपूर्ण उपलब्धियों

को प्रस्तुत किया जाएगा। प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर डॉ. गीतम चावला ने कृषि में सूत्रकृमियों द्वारा नई उभरती समस्याओं, उनके प्रबंधन तथा किसानों द्वारा सूत्रकृमियों के सफल प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने गत वर्ष के दौरान किए गए कार्यों एवं उपलब्धियों के बारे में विस्तृत रिपोर्ट भी प्रस्तुत की। उन्होंने प्राकृतिक खेती, विभिन्न फसलों, दालों, सब्जियों एवं किसानों को विभिन्न प्रकार की जानकारी देने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में भी बताया। विश्वविद्यालय के कृषि महा विद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने सभी का स्वागत किया जबकि सूत्रकृमि विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। मंच का संचालन डॉ. चेन्ना भट्ट ने किया। इस अवसर पर विश्व विद्यालय के सूत्रकृमि विभाग के अधिकारीगण सहित देश के 24 केंद्रों से आए वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों ने भाग लिया।